नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

सड़क हादसे : अब निर्णायक कार्रवाई का समय

मध्य प्रदेश विधानसभा में प्रस्तुत सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़े केवल सरकारी रिकॉर्ड नहीं हैं, बल्कि हजारों परिवारों के उजड़ने की दर्दनाक कहानी भी हैं. जनवरी 2025 से 7 जुलाई 2026 तक प्रदेश में 90,138 सड़क दुर्घटनाएं हुईं. इनमें 25,869 लोगों की मृत्यु हुई और 95,843 लोग घायल हुए. इसका अर्थ है कि औसतन प्रतिदिन 474 सड़क हादसे हुए और लगभग 136 लोगों ने अपनी जान गंवाई. यह स्थिति किसी भी संवेदनशील समाज और सरकार के लिए गंभीर चिंता का विषय है.

सड़क दुर्घटनाओं को अक्सर केवल मानवीय भूल मान लिया जाता है, जबकि इसके पीछे कई कारण एक साथ काम करते हैं. खराब सड़क इंजीनियरिंग, ब्लैक स्पॉट, तेज रफ्तार, ओवरलोडिंग, शराब पीकर वाहन चलाना, हेलमेट और सीट बेल्ट के नियमों की अनदेखी, अपर्याप्त ट्रैफिक प्रबंधन तथा समय पर चिकित्सा सहायता का अभाव. ये सभी मिलकर दुर्घटनाओं को जानलेवा बना देते हैं. यदि इन कारणों पर समग्र रूप से काम नहीं किया गया तो केवल जागरूकता अभियान चलाने से अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे. सरकारी आंकड़ों के अनुसार इंदौर में सबसे अधिक सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं. यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि यहां वाहनों का दबाव सबसे अधिक है. वहीं भिंड में सर्वाधिक मौतें होना यह संकेत देता है कि केवल दुर्घटनाओं की संख्या ही नहीं, बल्कि दुर्घटना के बाद मिलने वाली चिकित्सा सुविधा और सड़क सुरक्षा मानकों का स्तर भी अलग-अलग जिलों में गंभीर समीक्षा की मांग करता है.

सबसे चिंताजनक तथ्य 'राहवीर योजना' का सीमित प्रभाव है. सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को 'गोल्डन ऑवर' के भीतर अस्पताल पहुंचाना जीवन और मृत्यु के बीच का सबसे महत्वपूर्ण समय माना जाता है. इसके बावजूद योजना लागू होने के बाद पूरे प्रदेश में केवल 49 लोगों को सम्मानित किया गया. यह संख्या बताती है कि या तो लोगों को योजना की जानकारी नहीं है अथवा प्रशासन इसका पर्याप्त प्रचार-प्रसार नहीं कर पाया. यदि नागरिकों को कानूनी सुरक्षा और प्रोत्साहन की जानकारी मिले तो अनेक लोगों की जान बचाई जा सकती है. अब आवश्यकता केवल चिंता व्यक्त करने की नहीं, बल्कि ठोस सुधारों की है. सबसे पहले प्रदेश के सभी दुर्घटना-प्रवण ब्लैक स्पॉट का वैज्ञानिक सर्वे कर उन्हें प्राथमिकता के आधार पर सुधारा जाए. राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों पर आधुनिक संकेतक, पर्याप्त रोशनी, सुरक्षित डिवाइडर और पैदल यात्रियों के लिए सुविधाएं विकसित की जाएं. यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों पर तकनीक आधारित सख्त निगरानी हो तथा हेलमेट और सीट बेल्ट के नियमों का बिना किसी भेदभाव के पालन कराया जाए. इसके साथ ही हर जिला अस्पताल और प्रमुख मार्गों पर अत्याधुनिक ट्रॉमा सेंटर तथा पर्याप्त एंबुलेंस नेटवर्क विकसित करना समय की आवश्यकता है. स्कूलों, कॉलेजों और ड्राइविंग लाइसेंस प्रक्रिया में सड़क सुरक्षा शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए. भारी वाहनों के चालकों के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण और प्रशिक्षण की व्यवस्था भी दुर्घटनाओं में कमी ला सकती है.

मध्य प्रदेश तेजी से विकसित हो रहा है. बेहतर सड़कें विकास का प्रतीक हैं, लेकिन यदि वही सड़कें लोगों की जान लेने लगें तो विकास का उद्देश्य अधूरा रह जाता है. सड़क सुरक्षा को केवल परिवहन विभाग की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सरकार, प्रशासन, पुलिस और नागरिक समाज की साझा जिम्मेदारी बनाना होगा. आंकड़ों पर चर्चा से अधिक महत्वपूर्ण है कि उन पर समयबद्ध कार्रवाई हो. हर बची हुई जान ही किसी भी सड़क सुरक्षा नीति की सबसे बड़ी सफलता होगी.

एआई के युग में भविष्य किसका होगा?

देवेश कुमार माथुर

> हर पीढ़ी के सामने एक ऐसा क्षण आता है, जब उसे यह तय करना होता है कि वह परिवर्तन का दर्शक बनेगी या सहभागी. आज की पीढ़ी भी ऐसे ही मोड़ पर खड़ी है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस निश्चित रूप से कार्य करने के तरीकों को बदलेगा. कुछ भूमिकाएँ समाप्त होंगी, अनेक नई भूमिकाएँ जन्म लेंगी और लगभग हर पेशे की प्रकृति बदल जाएगी. लेकिन एक बात नहीं बदलेगी—मनुष्य की सीखने, सोचने, सृजन करने और सही निर्णय लेने की क्षमता का महत्व. यही कारण है कि भविष्य की सबसे बड़ी तैयारी किसी एक तकनीक में दक्षता प्राप्त करना नहीं, बल्कि स्वयं को निरंतर विकसित करने की आदत बनाना है. अंतत : भविष्य मशीनों और मनुष्यों के बीच की प्रतिस्पर्धा का नहीं होगा. भविष्य उन लोगों का होगा जो तकनीक को अपना सहयोगी बनाएँगे, सीखना कभी नहीं छोड़ेंगे और हर परिवर्तन में नए अवसर खोजने का साहस रखेंगे. तकनीक भविष्य का निर्माण करेगी, लेकिन उस भविष्य का चरित्र आज भी मनुष्य के विचार, मूल्य और विवेक ही तय करेंगे. और शायद यही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग का सबसे बड़ा सत्य है.

भविष्य उनका नहीं होगा जिनके पास सबसे अधिक जानकारी होगी, बल्कि उनका होगा जो सबसे तेज़ी से सीख सकेंगे, बदल सकेंगे और नई परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को विकसित कर सकेंगे. मानव सभ्यता का इतिहास केवल युद्धों, साम्राज्यों और राजनीतिक परिवर्तनों का इतिहास नहीं है. यह उन तकनीकी क्रांतियों का भी इतिहास है जिन्होंने समाज, अर्थव्यवस्था और मानव जीवन की दिशा बदल दी. पहिए के आविष्कार से लेकर मुद्रण कला, भाप के इंजन, बिजली, कंप्यूटर और इंटरनेट तक प्रत्येक तकनीकी परिवर्तन ने कार्य करने के तरीकों को बदलने के साथ-साथ मानव समाज के सामने नए अवसर और नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की.

आज दुनिया एक बार फिर ऐसे ही ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ी है. अंतर केवल इतना है कि इस बार परिवर्तन की गति पहले से कहीं अधिक तेज़ है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) ने उस सीमा को भी चुनौती दे दी है जिसे लंबे समय तक केवल मानवीय बुद्धि का क्षेत्र माना जाता था. अब मशीनें केवल दोहराए जाने वाले कार्य ही नहीं कर रहीं, बल्कि लेख लिख रही हैं, चित्र बना रही हैं, शोध में सहायता कर रही हैं, डेटा का विश्लेषण कर रही हैं, रोगों की पहचान में चिकित्सकों का सहयोग कर रही हैं और व्यावसायिक निर्णयों को अधिक सटीक बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. स्वाभाविक है कि इस परिवर्तन ने दुनिया भर में अनेक प्रश्न खड़े किए है. क्या एआई मनुष्य की नौकरियाँ छीन लेगा? क्या विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली डिग्रियाँ अप्रासंगिक हो जाएँगी? क्या आने वाले वर्षों में मशीनें मनुष्य से अधिक सक्षम हो जाएँगी? इन प्रश्नों पर गंभीर चर्चा आवश्यक है, लेकिन शायद उससे भी अधिक आवश्यक यह समझना है कि हम गलत प्रश्न पूछ रहे है. वास्तविक प्रश्न यह नहीं है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या कर सकता है. वास्तविक प्रश्न यह है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में मनुष्य को क्या सीखना चाहिए.

यही प्रश्न आने वाले वर्षों में किसी भी विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी, उद्यमी और नीति-निर्माता के भविष्य का निर्धारण करेगा. कुछ समय पहले एक विद्यार्थी ने मुझसे पूछा, सर, क्या अब अपने विषय की पढ़ाई से अधिक एआई सीखना ज़रूरी हो गया है? यह प्रश्न केवल एक विद्यार्थी का नहीं था. यह आज लाखों युवाओं के मन में उठने वाला प्रश्न है, जो अपने भविष्य को लेकर उत्साहित भी हैं और चिंतित भी. इसी विषय पर कुछ समय पूर्व मेरी चर्चा एक प्रतिष्ठित कंपनी के मानव संसाधन प्रमुख से हुई. बातचीत के दौरान मैंने उनसे पूछा कि आज उद्योग जगत नए स्नातकों से सबसे अधिक क्या अपेक्षा रखता है. उनका उत्तर उल्लेखनीय था. उन्होंने कहा, हमें ऐसे लोग चाहिए जो सीखने के लिए तैयार हो. तकनीक बदलती रहेगी, इसलिए स्थायी महत्व किसी डिग्री का नहीं, बल्कि सीखने की क्षमता का है. यह उत्तर केवल एक कॉर्पोरेट अधिकारी का विचार नहीं था, बल्कि बदलती वैश्विक कार्य संस्कृति का सार था. आज उद्योग जगत ऐसे लोगों की तलाश में है जो केवल निर्देशों का पालन न करें, बल्कि समस्याओं को समझ सकें, नए समाधान खोज सकें, टीम के साथ प्रभावी संवाद कर सकें और बदलती परिस्थितियों में स्वयं को लगातार बेहतर बनाते रहे. यही कारण है कि आज प्रतिस्पर्धा मनुष्य और मशीन के बीच नहीं है. वास्तविक प्रतिस्पर्धा उन लोगों के बीच है जो सीखना जारी रखते हैं और उन लोगों के बीच जो यह मान लेते हैं कि अब सीखने के लिए कुछ नया नहीं बचा.

इतिहास यह भी बताता है कि तकनीक ने कभी मनुष्य की आवश्यकता समाप्त नहीं की. उसने केवल मानव भूमिका को बदल दिया. औद्योगिक क्रांति के समय भी अनेक लोगों को लगा था कि मशीनें रोजगार समाप्त कर देंगी. कंप्यूटर आने पर भी यही आशंका व्यक्त की गई थी. इंटरनेट के प्रसार ने भी अनेक पारंपरिक व्यवसायों को प्रभावित किया. लेकिन समय के साथ यह स्पष्ट हुआ कि तकनीक ने जितनी भूमिकाएँ समाप्त कीं, उससे कहीं अधिक नए अवसर भी पैदा किए.

महाकौशल की डायरी

दावेदारों की जोर आजमाईश...

अविनाश दीक्षित

भारतीय जनता युवा मोर्चा के नगर अध्यक्ष बनने का सपना किसका पूरा होगा और किसके सपने चकनाचूर होंगे ये तो आने वाले कुछ दिनों में स्पष्ट हो जाएगा लेकिन अभी भाजयुमो नगर अध्यक्ष पद की कुर्सी पाने के लिए जिस प्रकार से अपने-अपने राजनैतिक आकाओं, नेताओं के दरबार में पहुंचकर दावेदारों द्वारा अंतिम दौर की जोर आजमाईश की जा रही है उससे तो स्पष्ट हो गया है कि भारतीय जनता युवा मोर्चा के नगर अध्यक्ष की कुर्सी उनके लिए कितने मायने रखती है.

भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्याम टेलर के द्वारा जारी की गई संगठनात्मक नियुक्तियों की पहली सूची में भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष का नाम नहीं आने से ये भी स्पष्ट नजर आ रहा है कि संगठन के हाईकमान के लिए अध्यक्ष पद के नाम का चयन आसान नहीं हो रहा है. राजनैतिक जानकारों की माने तो जबलपुर से कई दावेदारों के नाम भोपाल तक पहुंच चुके हैं और इनमें से हर एक दावेदार के संबंध जबलपुर भाजपा के कद्दावर नेताओं से जुड़े हुए हैं. ऐसे में किस भाजपा नेता की पसंद के नाम पर अंतिम मुहर लगती है उस पर अटकलों का दौर तो जारी है ही साथ ये बड़े नेताओं के बीच प्रतिष्ठा का दांव बनते दिख रहा है. विदित हो कि मध्य प्रदेश के चार बड़े महानगरों में से एक जबलपुर राजनीतिक रूप से काफी अधिक सक्रिय जिला है और यहां होने वाले बदलाव या नियुक्तियां प्रदेश की राजनीति में अपना प्रभाव छोड़ती है.

जानकारी के अनुसार हाल ही में जारी की गई सूची में जबलपुर ग्रामीण युवा मोर्चा अध्यक्ष के लिए पंकज तिवारी के नाम पर मुहर लग गई थी. उधर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, संघ सहित विभिन्न नेताओं तथा स्थानीय भाजपा संगठन की ओर से कुछ नाम नगर अध्यक्ष के लिए आगे बढ़ाए गए हैं मगर अंतिम मुहर किस नाम पर लगेगी ये अब भी पहेली बना हुआ है. विदित हो कि युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष अभी आने वाले समय में कई विभिन्न जिलों के नगर अध्यक्ष ग्रामीण अध्यक्ष के नाम की घोषणा करेंगे.

खबर तो ये भी है कि भारतीय जनता युवा मोर्चा के ग्रामीण अध्यक्ष पद पर जिसको नियुक्त किया गया है वो विधायक अजय विश्रोई की पसंद थे और संगठन ने विधायक की पसंद पर अंतिम मुहर लगा दी थी लेकिन जबलपुर नगर अध्यक्ष के नामों पर भी कई कद्दावर भाजपा नेताओं की चिट्ठी भोपाल तक पहुंच चुकी है, जिसके चलते कशमकश और बढ़ गई है.

मौत के बाद एएसआई का प्रमोशन...!

अधिकारी-कर्मचारियों के सेवा के रिकॉर्ड को संभालकर और अपडेट कर रखना कितना जरूरी होता है ये पुलिस मुख्यालय को अब पता चल ही गया होगा. मृत होने के बाद भी पदोन्नति सूची में एक महिला एएसआई का नाम जब पुलिस मुख्यालय द्वारा जारी की गई सूची में सार्वजनिक हुआ तो चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया. इतनी बड़ी लापरवाही ने पुलिस मुख्यालय को ये संदेश तो जरूर दे दिया कि विभागीय अभिलेखों का नियमित रूप से अपडेशन करना कितना जरूरी होता है जिससे इस असहज और शर्मनाक स्थिति से बचा जा सके. मामला नरसिंहपुर जिले में एएसआई प्रेमलता ठाकुर के नाम से जुड़ा है जिनका निधन विगत 1 मई 2026 को हो गया था बावजूद इसके एएसआई का नाम हाल ही में जारी की गई पदोन्नति सूची में सामने आया. इस गंभीर चूक ने पुलिस मुख्यालय की सत्यापन प्रक्रिया और रिकॉर्ड संधारण व्यवस्था पर भी सवाल खड़े किए. चूक किससे और कैसे हुई ये तो बाद का विषय है लेकिन हाल ही में पुलिस मुख्यालय के काम को लेकर जो चर्चाएं शहर व जबलपुर पुलिस महकमे में व्याप्त हैं वह काफी निराशाजनक भी हैं. जबलपुर पुलिस कर्मचारियों के खेमे में चर्चाएं तेज हैं कि यदि समय रहते रिकॉर्ड का मिलान और सत्यापन किया जाता, तो ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं होती. वहीं विभागीय स्तर पर इसे गंभीर लापरवाही भी माना जा रहा है. आलम ये है कि जबलपुर पुलिस के कुछ अधिकारी व कर्मचारी दबी जुबान से सवाल भी खड़े कर रहे हैं कि जब संबंधित पुलिस अधिकारी का निधन हो चुका था तो उनका नाम पदोन्नति सूची तक कैसे पहुंच गया. इससे तो ये साफ है कि पदोन्नति से पहले सेवा अभिलेखों और कर्मचारियों की वर्तमान स्थिति का समुचित सत्यापन ही नहीं किया गया. जिसका खामियाजा फिलहाल पुलिस मुख्यालय को अपनी कार्यशैली के बारे में अनाप शनाप सुनकर उठाना पड़ रहा है.

अयोध्या के बाद क्या अब मथुरा की बारी!

मथुरा में पूरे देश से कारसेवकों को आने का आवाहन तथा कार सेवा के लिए ऐलान किया गया है. आजाद भारत में मंदिर निर्माण के लिए यह कारसेवा नंबर दो है. पहली कारसेवा अयोध्या में रामलला के मंदिर निर्माण के लिए हुई थी और यह दूसरी अब 34 साल बाद मथुरा में होने जा रही है. पहली कारसेवा का परिणाम सभी देख चुके हैं, अब दूसरी से क्या होगा? चर्चा है कि राम मंदिर में चढ़ावा चोरी विवाद की आंधी का जवाब अब मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर में कारसेवा के तूफान से देने की तैयारी आरंभ हो गई है. मथुरा में कारसेवा का आवाहन करना एक ऐसी रणनीति का हिस्सा हो सकता है, जो अगले साल उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनावों में तहलका मचा दे. पहले इसके लिए जो तारीख तय की गई थी, वह 9 अगस्त 2026 थी. फिर अखाड़ा परिषद ने कुछ सोचकर 9 अगस्त को कैंसिल कर दिया और कहा कि अगली तारीख का ऐलान बाद में होगा. अब कहा यह जा रहा है कि कांवड़ मेला के बाद यह तारीख तय की जाएगी. कांवड़ मेला इस बार 11 अगस्त तक है. मथुरा का श्रीकृष्ण जन्मभूमि विवाद, राममंदिर की तरह खिंच रहा है. 13 अखाड़ा परिषदों के संगठन अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के इस ऐलान के बाद यह बात भी उठ रही है कि श्रीकृष्ण के वंशज कहे जाने वाले यदुवंशी अर्थात यादवों के मुखिया का दावा करने वाली सपा के प्रमुख अखिलेश यादव क्या करेंगे? वैसे यह भी कहा जा रहा है कि वह खुद यहां आकर एक ईंट लगाकर श्रीकृष्ण मंदिर के निर्माण कार्य का शुभारंभकराएं? इस तरह देखा जाए तो अगले वर्ष होने वाले चुनावों से पहले उत्तर प्रदेश एक बार फिर राम के बाद श्रीकृष्ण के नाम पर राजनैतिक अखाड़ा बनने जा रहा है. उत्तर प्रदेश की राजनीति दूसरी बातों से कम, धार्मिक भावनाओं से अधिक प्रभावित होती है और अगर कारसेवा की घोषणा हुई है तो इसके पीछे भी कहीं न कहीं सत्ता की रणनीति हो सकती है. अगले साल उत्तर प्रदेश में विधानसभा के चुनाव होने हैं और यहां के नतीजे पूरे देश की राजनीति को प्रभावित करते हैं. चुनौती सपा या दूसरे दलों के लिए है कि वह किस तरह से इसका मुकाबला करते हैं.

-मनोज वार्ष्णेय

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कॉकरोचों पर पुलिस को आया तैश जिसकी लाठी उसकी भैंस

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें लाठी का महत्व समझाइए.' हमने कहा, 'क्या करेंगे हवा में लाठी भांजकर? कोई ठोस काम कीजिए. जमीनी हकीकत और चुनौतियों का सामना कीजिए. मिसाइल के जमाने में लाठी की बात मत कीजिए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आप हमारे सवाल का जवाब टाल रहे हैं और लाठी की महिमा बताने से कतरा रहे हैं. कुछ लोग तो अपने बेटे के बारे में सभी को बड़े भरोसे के साथ बताते हैं कि यही तो हमारे बुढ़ापे की लाठी है.' हमने कहा, 'आप जवानी या बुढ़ापे के फेर में मत पड़िए. इतना जान लीजिए कि जो डाका डालता है वह डकैत और लाठी चलाता है वह लठैत !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, सभी की लाठी एक समान नहीं होती. उसमें कुछ फर्क जरूर रहता होगा.' हमने कहा, 'बेशक फर्क रहता है. देश को आजादी दिलाने वाले महात्मा गांधी की लाठी अहिंसक थी. उसने कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया. बापू का प्रतीकात्मक चित्र सिर्फ गोल लेंस वाले चश्मे के फ्रेम और लाठी की आकृति से बनाया जा सकता है. उस लाठी को आप चाहें तो जादू का डंडा मान लें जिसे देखकर अंग्रेज भाग निकले. दूसरी तरह की लाठी पुलिस के पास होती है जिससे वह निहत्थे प्रदर्शनकारियों, छात्रों यहां तक कि 15-16 साल के बच्चों पर भी निर्ममता से प्रहार करती है. दिल्ली में चली लाठी के बारे में कहा जाता है कि उसमें स्क्रू और कांटेदार तार भी लगे थे. प्रदर्शनकारियों को खदेड़ने और तितर-बितर करने के लिए लाठी चलाने का आदेश दिया जाता है. सरकार की मजबूती लाठी के जोर पर कायम रहती है. आपने कहावत सुनी होगी- जिसकी हराम लाठी, उसकी भैंस ! लाठी को लचीली और मजबूत बनाने के लिए उसे सरसों का तेल पिलाया जाता है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी नेतृत्व की सरकार को लाठी से इतना लगाव क्यों है? कोई खास वजह है क्या?'

हमने कहा, 'जिस प्रकार गंगोत्री से गंगा निकली है वैसे ही संघ से बीजेपी उत्पन्न हुई है. आरएसएस के हर स्वयंसेवक के पास लाठी होती है जिसे वह दंड कहता है. वह शाखा में जाकर उसे घुमाने के पैंतरे सीखता है और जब वर्ग शिक्षक बन जाता है तो नए स्वयंसेवकों को इसकी ट्रेनिंग देता है. उसकी संस्कृति में लाठी की बड़ी अहमियत है. वैसे ही सत्ता के संरक्षण में दमनकारी लाठी की कीमत है. एक बात याद रखिए कि अन्याय की भी एक हद होती है. कहावत है-ऊपरवाले की लाठी में आवाज नहीं होती !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12328 - डॉ. सागर खादीवाला

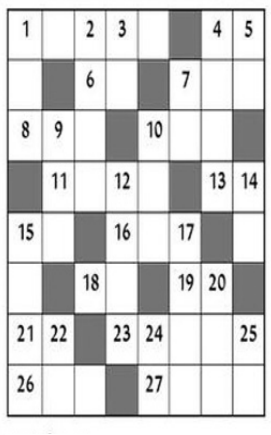

ऊपर से नीचे

1. लेने वाला, पाने वाला (सं.) 2. मारने-काटने का काम या भाव, लड़ाई 3. समाप्ति, समाप्ति सूचक शब्द (सं.) 4. कोई मीठा पेय पदार्थ, पानी, घुली हुई शक्कर या खांड 5. ऊंचाई 7. प्राप्त करना, हासिल करना 9. बहुत बारीक छिद्रों में से निकलना 10. अर्थी, मृतक शरीर 12. कमल के समान सुंदर नयनों वाली स्त्री (सं.) 14. शहद (सं.) 15. पीले रंग का वस्त्र, रेशमी धोती जो पूजा पाठ करते समय पहनी जाती है, श्रीकृष्ण (सं.) 17. किसान 20. दक्षिण बिहार का प्राचीन नाम 22. एक लाख की संख्या 24. लक्ष्मी, पत्नी (सं.) 25. रण, युद्ध, जंगल

बाएं से दाएं

1. परीक्षा, जांच, परख 4. संदेह, शंका (उर्दू), 6. कामदेव की पत्नी (सं.) 7. पारा (सं.) 8. नक्षत्र, सिनेमा की अभिनेत्री 10. महाशय, महोदय 11. चंपत होना, धीरे से खिसक जाना 13. अंधकार, अंधेरा, पाप (सं.). 15. द्रव पदार्थ को मुख द्वारा ग्रहण करना, मद्यपान करना 16. हंसी-ठट्ठा, दिल्लगी, ठिठोली 18. दुर्ग, गढ़, कोट 19. एक प्रकार की अंग्रेजी शराब 21. शक्ति, सामर्थ्य. 23. पुराणों में वर्णित दूध का समुद्र (सं.) 26. रक्षा करने वाला, पहरेदार 27. जो अपने मान या इज्जत को ही धन समझता हो (सं.)

Solution 12327

ब	घा	र	ना	■	सा	बि	त
र	म	ता	■	ला	त	■	र
क	■	ना	खु	श	■	खा	फ
त	न	■	द	■	ज	र	दा
■	त	र	रा	ना	■	स्व	र
अ	म	न	■	ला	■	त	■
प	स्त	■	नि	य	म	■	धा
ना	क	ना	■	क	र्म	चा	री

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ की यात्रायें होंगी, धन व्यय होगा. मानसिक उलझन रहेगी. शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. वर्ष के मध्य में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा. सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी.वर्ष के अन्त में भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा. दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्राओं में धन व्यय होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को मानसिक उलझन रहेगी. सिह राशि के व्यक्तियों को व्यक्तित्व का विकास होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संबंधों में सुधार होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हंसमुख, मिलनसार होगा. शिक्षा में अग्रणी होगा. नौकरी या पैतृक कार्यो में संलग्नता रहेगी. मेहनत अधिक करेगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

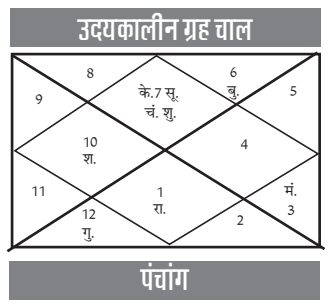

पंचांग

रा.मि. 02 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल दशमीं भृगुवासरे दिन 10/9, अनुराधा नक्षत्रे दिन-रात, शुक्ल योगे रात 10/26, कौलव करणे सू.उ. 5/20, सू.अ. 6/40, चन्द्रचार वृश्चिक, शु.रा. 8,10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक-0,3,7.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल दशमीं को अनुराधा नक्षत्र के प्रभाव से लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी, किन्तु आज मंदी पर गेंहूँ, चना में तेजी का रूख रहेगा. तिलहन में तेजी का योग है. सफेद रंग की वस्तुओं में अचानक तेजी होगी. भाग्यांक 5719 है.

मेष- अपनी मेहनत को बेकार होते देखना खिन्नता पैदा करेगा, प्रियजनों सेमनमुटाव संभव है. किसी व्यक्ति की सलाह आपके कार्यो को गति देगा. लाभप्रद सूचना मिलेगी.

वृषभ- भावनाओं में बहकर आप परिवार को विरोधी बना लेंगे, किसी व्यक्ति के द्वारा अपमान का शिकार होना पड़ेगा. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

मिथुन- अपनी बात समझाने में नाकाम रहेंगे, और संबंधों में दूरियां बढ़ सकती हैं. अनावश्यक कार्यो में समय एवं धन खर्च होगा. श्रम की अधिकता रहेगी.

कर्क- शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी दूर होगी. आर्थिक लाभ का योग है. कामकाजी महिलाओं को कार्य अधिक करना होगा.

सिंह- कार्य का चिन्तन तनाव का कारण बन सकता है. व्यापारिक सौदेबाजी में सावधानी रखें. कुटुम्बियों के कार्यो को पूरा करने में व्यस्तता रहेगी.

कन्या- योजनाओं में बदलाव करके अच्छा लाभ कमा सकते हैं .दुविधा से हटकर कार्य करें. पूँजी लगाने में सावधानी रखें. मांगलिक कार्य बनेंगा. संयम रखें.

तुला- अपूर्ण समाचारों पर लिये गये फैसले से नुकसान होगा. वैभव विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा.सहकर्मियों का सहयोग प्राप्त होगा.

वृश्चिक- सुख सुविधा के सामानों पर बड़े खर्च की संभावना है. दौड़धूप में सफलता मिलेगी. सुख सुविधा एवं आनन्द की अनुभूति होगी. कुछ कार्यों में परेशानी आ सकती है.

धनु- प्रापर्टी संबंधी विवादों के समाधान से राहत मिलेगी. कोर्ट कचहरी के कार्यो में विलंब होगा. सुख शांति में कमी होगी. कम लाभ में भी संतोष बना रहेगा.

मकर- आपका झुकाव परिवार की ओर कुछ ज्यादा ही रहेगा, जिससे कार्य स्थल की व्यवस्था बिगड़ सकती है. कार्य कुशलता से बड़े बड़े काम बनेंगे.

कुम्भ- मांगलिक कार्यो में खर्च की संभावना बन सकती है. व्यापार व्यवसाय में सावधानी रखें. सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. जीवनसाथी के सहयोग से लाभ होगा.

मीन- तनाव के चलते सेहत बिगड सकती है. शुभ समाचारों के मिलने का योग है. परिश्रम सार्थक होगा. नौकरी में अधिकारियों के कोप का सामना करना पड़ेगा.

SUDOKU 7460

7	8	6		1		5		2
	9			8				3
1			6	9		7		
	3	8	2		1			
2	7	5				6	3	1
			5		7	2	8	
		9		7	4			6
8				2			5	
4		2		5		9	1	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7459

2	9	5	3	1	4	6	8	7
3	6	1	2	8	7	4	9	5
8	4	7	5	9	6	3	2	1
5	7	4	1	6	2	8	3	9
1	3	6	9	4	8	5	7	2
9	8	2	7	3	5	1	4	6
6	2	8	4	7	1	9	5	3
4	5	3	6	2	9	7	1	8
7	1	9	8	5	3	2	6	4